"हिन्दी-काव्य की स्वच्छन्द प्रेम-धारा और घनानन्द"

रीतिमुक्त स्वच्छन्दतावादी कवियों में घनानन्द का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। स्वच्छन्द काव्य-धारा से तात्पर्य कविता की उस पद्धति से है, जो काव्यशास्त्र द्वारा निर्मित विधि-विधानों से सर्वथा निरपेक्ष होती है अर्थात् परम्परागत रूढ़ियों से सर्वथा उन्मुक्त होती है। इसके अतिरिक्त काव्य की स्वच्छन्द प्रेमधारा से अभिप्राय ऐसी काव्य-प्रणाली से होता है, जो नैसर्गिक एवं प्रकृत प्रेम से परिपूर्ण होती है। जिसमें प्रेम की कृत्रिमता एवं आडम्बरप्रियता नहीं होती, जिसमें प्रेम की तरल तरंगों में निमग्न हृदय-वीणा की झंकार होती है और जो प्रेम के गूढ़ भावों से भरी होती है। इस दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि 'काव्य की स्वच्छन्द प्रेम-धारा' उसे कहते हैं जिसमें प्रेम के रूढ़िगत एवं शास्त्र प्रतिपादित वर्णनों के स्थान पर उसकी सर्वथा नूतन, स्वतंत्र, स्वच्छन्द एवं स्वाभाविक अभिव्यंजना होती है। हिन्दी-काव्य की स्वच्छन्द प्रेम-धारा का ऐतिहासिक दृष्टि से अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम 'ढोला मारू रा' नामक ग्रन्थ में स्वच्छन्द प्रेम का निरूपण हुआ है। इसमें ढोला और मारू (भास्य) की प्रेम-कहानी है, जिसमें प्रेम का अत्यन्त सुन्दर ढंग से निरूपण हुआ है।

इसके उपरान्त अब्दुर्रहमान कृत 'संदेश रासक' नामक काव्य उपलब्ध होता है। इसमें कवि ने प्रेम में उन्मत्त स्त्री-पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ प्रस्तुत करते हुए पुरुषों को अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के

लिए शरीर तक का परित्याग कर देने वाला तथा प्रेम में पाप की भी परवाह न करने वाला बताया है। तत्पश्चात् रसखान कवि कृत 'प्रेम वाटिका' एवं 'सुजान रसखानि' नामक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें कवित्त सवैया छन्द के अन्तर्गत सच्चे प्रेम का निरूपण किया गया है। तदनन्तर आलम कवि द्वारा लिखित 'माध्वानल कामकंदला' और 'स्याम-सनेही' नामक दो ऐसे ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें स्वच्छन्द प्रेम का अधिक मनोहारी वर्णन मिलता है।

तत्पश्चात् इस स्वच्छन्द प्रेम-धारा के घनानन्द कृत 'सुजान-हित', वियोग-बेलि, इश्कलता, प्रीति-प्रवाह, प्रेम-पत्रिका, प्रेम-सरोवर, प्रेम-पद्धति, प्रेम-पहेली आदि ग्रन्थ मिलते हैं। जिनमें घनानन्द की प्रेम-सरिता के स्वच्छन्द प्रवाह के दर्शन होते हैं। घनानन्द के इस स्वच्छन्द प्रेम-काव्य में सहज प्रेम-सम्वेदना एवं तीव्र विरहानुभूति के साथ-साथ उक्ति वैचित्र्य एवं साहित्यिक सौन्दर्य का भी उत्कृष्ट रूप विद्यमान है। तदनन्तर इस धारा के अन्तर्गत ठाकुर कृत 'ठाकुर-ठसक' एवं 'ठाकुर-शतक' नामक दो ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें स्वाभाविक तन्मयता के साथ प्रेम-भाव का निरूपण हुआ है। इनके उपरान्त इसी स्वच्छन्द प्रेम-धारा में सुकवि बोधा कृत 'इश्कनामा' और 'विरह वारीश' नामक काव्य ग्रन्थ मिलते हैं। इसके अनन्तर इसी काव्यधारा में द्विजदेव कृत 'शृंगार-बत्तीसी' और 'शृंगार-लतिका' काव्य आते हैं।

इस प्रकार हिन्दी की सम्पूर्ण स्वच्छन्द

प्रेम-काव्य-धारा का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि इस धारा के प्रमुख कवियों में रसखान, आलम, घनानंद, ठाकुर और बोधा के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी कवि प्रेम-काव्य के प्रमुख प्रणेता हैं और इन्होंने स्वच्छन्दता के साथ प्रेमानुभूति का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है, परन्तु इनमें से घनानन्द सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि घनानन्द के काव्य में रसखान की-सी प्रेम की अनिर्वचनीयता भी है, आलम की-सी उन्मत्तता भी है, ठाकुर की-सी तन्मयता भी है और बोधा की-सी रस-सिद्धता भी है। घनानन्द ने 'सुजान' को आलम्बन बनाकर अपनी इस लौकिक प्रेयसी के रूप-सौन्दर्य का इतना मार्मिक एवं मनोरंजक वर्णन किया है कि देखते ही बनता है। सुजान की तिरछी चितवन, घूमते कटाक्ष, रसीली हँसी, मृदु-मुस्कान, अरुण ओठ, कान्तिमंडित दन्तावलि, सचिक्कण केशराशि, वक्रिम भौंहें, विशाल नेत्र, गर्वीली मुद्रा, उन्मत्त यौवन आदि पर मुग्ध घनानन्द ने उसकी 'रूप-निकाई' के अनेक संश्लिष्ट चित्र अंकित करते हुए जहाँ अपनी प्रेम विभोरता का परिचय दिया है, वहाँ मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार की इस नर्तकी के प्रति अपना ऐसा प्रणय-निवेदन किया है, जो हिन्दी-काव्य की स्थायी सम्पत्ति बन गया है।